राजेश जोशी के काव्य में समकालीन युगचेतना

राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग में पीएच0डी0 प्रवेश हेतु

प्रस्तुत शोध प्रारूप

वर्ष : 2025

शोध निर्देशक

विभाग अध्यक्ष

(डा० सुनीता कुमारी यादव)

शोधार्थी

प्रीति बखला

यू०जी०सी०नेट / जे०आर०एफ०उत्तीर्ण

विश्वविद्यायल हिन्दी

विभाग राँची, विश्वविद्यालय, राँची।

प्रस्तावना :– समकालीन हिन्दी कविता के उपरांत आठवें – नवें दशक के उभरते महत्वपूर्ण साहित्यकार राजेश जोशी हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक – राजनीतिक से पीड़ित आम–जनता, परिवर्तन की बेचैनी, संघर्ष–शील चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। राजेश जोशी वर्त्तमान समय के देश के कार्य–प्रणाली से संतुष्ट नहीं हैं, वर्त्तमान की विडम्बनाओं, विसगंतियों से टकराते हुए आगे बढ़ेते नजर आते हैं।

राजेश जोशी समकालीन कविता के प्रसिद्ध कवि, कहानीकार, नाटककार, आलोचक एवं संपादक के रूप में माने जाते हैं। उनकी कविता का सार आम–आदमी की समस्या, भुखमरी, बेरोजगारी, शोषण, अन्याय एवं शहरीकरण के समाज से परिवार के एक–दूसरे से टूटते परिवेश को यथार्थवादी चित्रण किया गया है। यथार्थवादी वर्ग–संघर्ष के साथ ही उसके परिवर्तन के लिए प्रतिरोध का भाव व्यक्त करते हैं। वर्त्तमान समय के परिवेश के प्रति सचेत एवं सतर्क कवि माने जाते है। राजेश जोशी अपने काव्य साहित्य के माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था सत्ता के खोखलेपन को उजागर किया है।

सम्मान :– साहित्य अकादमी पुरस्कार।

श्रीकांत वर्मा स्मृति सम्मान। पहल सम्मान, शमशेर सम्मान, मुक्तिबोध शिखर सम्मान, सरोज स्मृति सम्मान, जनकवि नागार्जुन स्मृति सम्मान, शशिभूषण स्मृति सम्मान आदि।

1 **इत्यादि** :– इत्यादि कविता राजेश जोशी द्वारा रचित ''दो पंक्तियों के बीच'' काव्य–संगृह में संकलित है। इत्यादि व्यंग्य परक कविता है। यह कविता भारतीय लोकतंत्र पर करारा व्यंग्यात्मक वर्णन किया गया है।

जब तक मैं एक अपील लिखता हूँ :–

'दो पंक्तियों के बीच' काव्य–संग्रह में सकंलित कविता है। इस कविता में राजेश जोशी भीड़ में पीछे छूट गये लोगों की बाते करते हैं आम–आदमी की आँखों से ओझल होते विषयों को उठाते हैं।

जिद – चाँद की वर्त्तनी में सकंलित जिद कविता है इसमें लेखक ने तत्कालीन परिवेश का लेखा–जोखा बड़ी ही तत्परता के साथ व्यक्त किया है। तत्कालीन समय के अतंर्विरोधों तथा विडम्बनाओं को व्यक्त करने और प्रतिरोध के लिए नए उपकरण की तलाश करने की बेचैनी उनके सग्रंह की मुख्य चिंता है।

नेपथ्य में हँसी– इसमें संकलित ''बच्चे काम पर जा रहे है'' मानवीय मूल्यों के पवन, संघर्ष, प्रसन्नता के लिए निरन्तर सामान्य जीवन जीने की कला नैतिक मानदंड, असुरक्षा का बोध एवं मानवीय मूल्य कविता की मूल बातें वर्णित है।

मारे जाएगें – कवि ने समाज के वर्त्तमान स्थिति का वर्णन किया है। राजनीति सत्ता पर भ्रष्टाचार चाटुकारिता, सत्ता लोलुप व्यवस्था पर हो रहे स्थिति को वर्त्तमान समय की हर उस क्षेत्र या सामाजिक व्यवस्था के बारे में बताता है जो इस अव्यवस्थित समाज का हिस्सा नहीं बनेगा वह मारा जाएगा!

रैली में स्त्रिया – चाँद की वर्त्तनी काव्य–संग्रह में प्रकाशित कविता है। उन्होनें अपनी कविता में नारी के सबल रूप का वर्णन किया है। जिसमें स्त्री सशक्तिकरण पर जोर देने की बात कही गई है। उनकी कविता बहन, बेटी की विदाई, मेरे भीतर एक स्त्री रहती हैं। ये कविताएँ इसके उदाहरण है।

संयुक्त परिवार – शहरीकरण, आधुनीकीकरण के बढ़ते परिवेश में समाज से परिवार के एक–दूसरे से कटते चले जा रहे स्थिति का वर्णन, नए प्रकार के उपकरणों के आ जाने से लोगों के संबंधों में अलगाव के रूझान दिखाई दिखाई देते हैं।

निष्कर्ष :– वर्णित काव्यों से हम कह सकते हैं कि राजेश जोशी जी सच्चे जनचेतना कवि के रूप में दिखाई देते हैं। उन्होंने आज के वर्त्तमान समस्याओं का समाधान एवं सचेत करते हुए दिखाई देते हैं। समाज में व्यक्त आम जनता के संघर्ष, शोषण अन्याय को साहित्य में उजागर किया है।

शोध का उद्देश्य :– राजेश जोशी अपने काव्य में समाज में व्याप्त विसगंतियों को उन्होंने अपने काव्य का विषय बनाया। समाज में शोषित वर्ग उपेक्षित जनता, राजनीति में होने वाले दाँव–पेच सांप्रदायिक स्थिति का जिक्र किया हैं। समाज की खोखली व्यवस्था, भूंडलीकरण, बेरोजगारी अन्य स्थिति को अपने काव्य में वर्णित किया है और साहित्य के माध्यम से समाज में लोगों को रूबरू कराते है।

वर्त्तमान समय में फैली तमाम समस्याओं के बावजूद वे निराश नहीं होते न निरश होने की बातें करते है बल्कि जागरूक करते है।

- राजेश जोशी के काव्य में भारतीय मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय समाज की समस्या राजनीतिक–सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक समस्याओं के साथ ही जीवन संघर्ष से जुड़े यथार्थवादी निरूपण है।
- उनके काव्य साहित्य में भ्रष्टाचार, वर्ग–विषमता, नारी संघर्ष, प्रकृति–चेतना आदि के लिए परिवर्त्तन एवं प्रतिरोध का भाव दिखाई देते है।

शोध की परिकल्पना :– शोध की परिकल्पना अर्थपूर्ण होनी चाहिए एवं अस्पष्टता से मुक्त होनी चाहिए। शोध की परिकल्पना आगे के शोध लेखन का ढाचाँ तैयार करने में मदद करती है। ये परिकल्पना नियमों पर आधारित होती है। इस प्रकार परिकल्पना से तात्पर्य किसी चीज के लिए एक विचार या स्पष्टीकरण जो ज्ञात तथ्यों पर आधारित है। शोध की परिकल्पना किसी भी अनुसंधान प्रक्रिया का अहम् हिस्सा माना जाता है। राजेश जोशी के काव्य रचनाओं को पढ़कर मेरे मन में उनके और रचनाओं को पढ़ने की जिज्ञासा हुई और गहन अध्ययन से मेरी शोध परिकल्पना का प्रारूप तैयार हुआ।

शोध की प्रविधि :– राजेश जोशी की संपूर्ण रचनाओं में समाज पर पड़ने वाले प्रभाव का यथार्थवादी चित्रण किया है। समाज में होने वाली समस्याओं

को संवेदना की गहराई से टटोलने का प्रयास किया गया है। राजेश जोशी के रचनाओं में उनके अपनी विचार एवं अनुभव के सकारात्मक रूप को दर्शाती है।

प्रस्तावित शोध विषय के लिए निम्नांकित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा।

1. राजेश जोशी द्वारा लिखित मूल ग्रन्थों का विचारात्मक, विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।
2. अन्य विद्वानों द्वारा लिखे गए ग्रन्थों से प्रमाण संग्रहित करना।
3. पत्र–पत्रिकाओं, लेखक द्वारा दिए गए साक्षात्तकार अनुभव, विचार को भी अध्ययन का आधार बनाया जाएगा।

पूर्व अध्ययन :– प्रस्तावित शोध कार्य ''राजेश जोशी के काव्य में समकालीन युगचेतनाः'' को सामने लाने में यथा संभव भूमिका निभा सकेंगे, अभी तक मेरी जानकारी में इस विषय पर पूर्व शोध कार्य हुए हैं –

- राजेश जोशी की काव्य : संवेदना एवं शिल्प काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
- लधु शोध – राजेश जोशी काव्य की कविताओं में युगबोध सिक्किम विश्वविद्यालय।

साहित्य अवलोकन :– वर्त्तमान समय की भयावहता को अभिव्यक्त करने वाले प्रसिद्ध प्रभावशाली कवि है। आम जनता के यथार्थ की वास्तविक समझ उनकी कविताओं में दिखाई देती हैं। आम आदमी के जन–जीवन एवं प्रकृति के प्रति घनिष्ट सबंधं को अभिव्यक्त किया गया है।

राजेश जोशी के काव्य में परिवर्त्तन की अंकाक्षा, प्रतिरोध, राजनीति व्यवस्था युगीन यथार्थ, सांप्रदायिक, शहरीकरण, बाजारवाद, नारी संघर्ष और प्रकृति चेतना आदि के प्रति गहन चिंतन दिखाई देते है।

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय :– राजेश जोशी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1.1 जीवनवृत

1.2 रचनात्मक संसार

1.3 सम्मान एवं पुरस्कार

द्वितीया अध्याय :– समकालीन हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि

2.1 नई कविता और समकालीन कविता

2.2 समकालीन परिस्थितियाँ

2.3 समकालीन कविता की प्रमुख धाराएँ

2.4 समकालीन कविता की विशेषताएँ

तृतीया अध्याय :–राजेश जोशी को कविताएं एवं उनके प्रमुख समकालीन कवि

3.1. सुदामा पाण्डे धूमिल

3.2. चंद्रकांत देवताले

3.3. अशोक वाजपेयी

3.4. अरूण कमल

चतुर्थ अध्याय :– राजेश जोशी के काव्य में सामाजिक एवं राजनीतिक पक्ष

4.1 आर्थिक शोषण की समस्या

4.2 राजेश जोशी के काव्य में सामाजिक विसंगतियों की समस्याएँ

4.3 भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद का प्रभाव

4.4 मानवतावादी दृष्टिकोण

4.5 नैतिक मूल्यों में परिवर्तन

4.6 प्रकृति – चित्रण

पंचम अध्याय :– भाषा और शिल्पगत वैशिष्ट्य

5.1. राजेश जोशी के काव्य की भाषा शैली

5.2. शिल्पगत विशेषता

5.3. प्रतीक एवं बिम्ब

निष्कर्ष

परिशिष्ट

सहायक ग्रन्थों की सूची/ संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रन्थ सूची

वेबसाइट

शोध निर्देशिक — शोधार्थी

(डा० सुनीता यादव) — (प्रीति बखला)